रीना कुमार

माँ का आँचल

वह भी कोई एक जमाना था
हर गम को भुलाने का
कोई एक सहारा था।
माँ तेरी याद मुझे बहुत आती है
दिल रो रो कर तुझे बुलाती है।
मां तेरे आंचल में छुपकर
तेरी गोदी में सर रखकर,
हर गम और हर थकान से
मिलता था एक सुकून मुझे.
हर दर्द और हर गम में मां
करती हूं मैं याद तुझे।
क्यों छूटा माँ तेरा घर क्यों छुटी तेरी अंगना।
क्यों छूटा माँ तेरा आँचल क्यों छुटा सब अपना।
घर भी मिला माँ अंगना भी मिला
पर नहीं मिला तेरा वह आँचल अपना।
दिल की व्यथा दिल में ही रहती है
टिस बनकर वह आंखों से बहती है।

मां तेरी याद मुझे बहुत आती है
दिल रो रो कर तुझे बुलाती है।
पास मेरे तो सब होते हैं
पर तेरे जैसे कोई अपने नहीं होते हैं।
शुभचिंतक तो सब होते हैं
पर तेरी याद में हम रो रो कर जीते हैं।
ब्याह हुआ मैं बनी पराई,
दिल के दर्द को दिल में छुपाई
मां तेरा आंचल छूट गया
हर सुकून अब टूट गया
वह भी कोई एक जमाना था
हर गम को भुलाने का कोई एक सहारा था।